



CA
14/1/86

भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

आधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 244]

नई दिल्ली, सोमवार, मई 19, 1986/वैशाख 29, 1908

No. 244]

NEW DELHI, MONDAY, MAY 19, 1986/VAISAKHA 29, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as
separate compilation

विधि और न्याय मंत्रालय

(विधायी विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 19 मई, 1986

सा.का.नि. 276(अ):—केन्द्रीय सरकार, मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 25) की धारा 6 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ:—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर अधिकार संरक्षण) नियम, 1986 है।

(2) ये तुरन्त प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं:—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) "अधिनियम" से मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 25) अभिप्रेत है;

(ख) "संहिता" से बृहद प्रक्रिया संहिता, 1973 (1974 का 2) अभिप्रेत है; और

(ग) "प्रत्येक" से इन नियमों से उपाखण्ड प्ररूप अभिप्रेत है।

3. समन की तारीख:—(1) इस अधिनियम के अधीन किए गए किसी आवेदन पर मजिस्ट्रेट द्वारा जारी किया गया प्रत्येक समन लिखित

रूप में और दो प्रतियों में मजिस्ट्रेट द्वारा या अन्य ऐसे अधिकारी द्वारा जिसे वह, समय-समय पर निर्दिष्ट करे, हस्ताक्षरित होगा और उस पर न्यायालय की मुद्रा लगी होगी।

(2) ऐसे प्रत्येक समन के साथ आवेदन की एक सत्य प्रतिलिपि होगी।

(3) उप-नियम (1) के अधीन जारी किए गए प्रत्येक समन में आवेदन की पहली सुनवाई की तारीख निर्दिष्ट होगी जो उस तारीख से सात दिन के पश्चात् की तारीख नहीं होगी जिस तारीख को समन जारी किया गया है।

(4) प्रत्येक समन की तामील किसी पुलिस अधिकारी द्वारा या उस न्यायालय के, जिसने वह समन जारी किया है, किसी अधिकारी द्वारा की जाएगी।

(5) यदि साध्य हो तो समन, प्रत्यर्थी पर, समन की तामील, उसे उस समन की दो प्रतियों में से एक का परिधान या निविदान करके व्यक्तिगत रूप से की जाएगी।

(6) प्रत्येक प्रत्यर्थी, जिस पर समन की ऐसे तामील की गई है, यदि तामील करने वाले अधिकारी द्वारा ऐसी अपेक्षा की जाती है, तो, दूसरे प्रति के पृष्ठ भाग पर उसके लिए रसीद हस्ताक्षरित करेगा।

(7) जहां प्रत्यर्थी सम्यक् तत्परता बरतने पर भी न मिल सके वहां समन की तामील दो प्रतियों में से एक को उसके कुटुम्ब के उसके साथ रहने वाले किसी बयस्क पुरुष सदस्य के पास उस व्यक्ति के लिए छोड़कर की जा सकती है और यदि तामील करने वाले अधिकारी द्वारा

ऐसी अपेक्षा की जाती है तो, जिस व्यक्ति के पास समन ऐसे छोड़ा जाता है उस दूसरी प्रति के पृष्ठ भाग पर उसके लिए रसीद हस्ताक्षरित करेगा।

(8) यदि उप-नियम (6) या उप-नियम (7) में उपबंधित रूप से तामील सम्यक् तत्परता बरतने पर भी न की जा सके तो, तामील करने वाला अधिकारी समन की दो प्रतियों में से एक को उस गृह या वास्तविक के, जिसमें प्रत्यर्थी मामूली तौर पर निवास करता है, किसी सहज दृश्य भाग में लगाएगा; और तब न्यायालय ऐसी जांच करने के पश्चात् जैसी वह ठीक समझे, या तो यह घोषित कर सकता है कि समन की सम्यक् तामील हो गई है, या वह ऐसी रीति से नई तामील का आदेश दे सकता है, जिसे वह उचित समझे।

(9) जब न्यायालय यह चाहता है कि, उसके द्वारा जारी किए गए समन की तामील उसकी स्थानीय अधिकारिता के बाहर किसी स्थान में की जाए, तब वह मामूली तौर पर ऐसा समन दो प्रतियों में, उस मजिस्ट्रेट को भेजेगा जिसकी स्थानीय अधिकारिता के अन्तर उसकी तामील की जानी है या प्रत्यर्थी निवास करता है।

(10) जब न्यायालय द्वारा जारी किए गए समन की तामील उसकी स्थानीय अधिकारिता के बाहर की गई है, तब और ऐसे किसी मामले में जिसमें वह अधिकारी जिसने समन की तामील की है, मामले की सुनवाई के समय उपस्थित नहीं है; मजिस्ट्रेट के समझ किया गया तात्पर्य यह शपथपत्र कि ऐसे समन की तामील की गई है और समन की दूसरी प्रति, जिसका उस व्यक्ति द्वारा जिसको समन परिदत्त या निविदत्त किया गया था, या जिसके पास वह छोड़ा गया था उप-नियम (6) या उप-नियम (7) पृष्ठांकित होगा तात्पर्य है, साध्य में ग्राह्य होगा, और जब तक तत्प्रतिकूल साबित न किया जाए उसमें किए गए कथन सही माने जाएंगे।

(11) उप-नियम (10) में वर्णित शपथपत्र समन की दूसरी प्रति से संलग्न किया जा सकता है और उस न्यायालय को भेजा जा सकता है।

4. साध्य.—अधिनियम के अधीन कार्यवाही में सब साध्य ऐसे प्रत्यर्थी की उपस्थिति में लिया जाएगा जिसके विशद उपबंध करने और भरणपोषण, मेहर या डाबर का संघाय करने या सम्पत्ति का परिचालन करने का आदेश देने की प्रस्थापना है या जब उसकी व्यक्तिगत हाजरी से अधिमुक्ति दे दी गई है, तब उसके प्लीडर की उपस्थिति में लिया जाएगा और संहिता के अधीन संक्षिप्त विचारण के लिए विनिर्दिष्ट रीति से अभिलिखित किया जाएगा;

परन्तु यदि मजिस्ट्रेट का यह समझान हो जाता है कि प्रत्यर्थी तामील से जानबूझकर बच रहा है या न्यायालय में हाजिर होने में जानबूझकर उपेक्षा कर रहा है, तो मजिस्ट्रेट उस मामले को एकपक्षीय रूप में सुनने और अवधारण करने के लिए अग्रसर हो सकता है, तथा ऐसे दिया गया कोई आदेश उसकी तारीख से सात दिन के अन्दर किए गए आदेश पर वर्णित अन्धे कारण से ऐसे निबंधनों के अधीन, जिनके अंतर्गत विरोधी पक्षकार को खर्च के संदाय के बारे में निबंधन भी है, जो मजिस्ट्रेट व्यावहित और उचित समझे, प्रपास्त किया जा सकता है।

5. कार्यवाहियों को मूल्यवी या स्थगित करने की शक्ति:—अधिनियम के अधीन प्रत्येक आदेश में कार्यवाही यथासंभव शीघ्रता से की जाएगी और विशिष्टतः जब साक्षियों की परीक्षा एक बार प्रारंभ हो जाती है तो, वह सभी हाजिर साक्षियों की परीक्षा हो जाने तक दिन-प्रतिदिन जारी रखी जाएगी, जब तक कि ऐसे कारणों से, जो लेखबद्ध किए जाएंगे, न्यायालय अगले दिन से परे के लिए उसे स्थगित करना आवश्यक न समझे।

6. खर्च:—अधिनियम के अधीन आदेशों की बाबत कार्रवाई करने में न्यायालय को खर्च की बाबत ऐसा आदेश करने की शक्ति होगी जैसा वह उचित समझे।

7. धारा 5 के अधीन शपथपत्र—अधिनियम की धारा 5 के अधीन फाइल किया गया शपथपत्र प्रारूप "क" में होगा।

8. धारा 5 के अधीन घोषणा—धारा 5 के अधीन लिखित रूप में फाइल की गई घोषणा प्रारूप "ख" में होगी।

प्रारूप "क"

शपथपत्र का प्रारूप

(नियम 7 देखिए)

मैं/हम सुपुत्र/पत्नी
 आयु वर्ष, निवासी और
 सुपुत्र/पत्नी आयु वर्ष,
 निवासी शपथ पर निम्नलिखित
 कथन करता/करती हूँ/करते हैं:—

1. मैंने/हमने मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 5 के उपबंधों और दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों को अच्छी प्रकार से समझ लिया है।

2. मैं/हम मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 के उपबंधों की तुलना में, दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों से शासित होना चाहता/चाहती हूँ/चाहते हैं।

3. ऊपर शपथ पत्र में जो कुछ कहा गया है वह सत्य है।

अभिमात्री

प्राज तारीख, 19... को हस्ताक्षरित और सत्यापित।

अभिमात्री

प्रारूप "ख"

घोषणा का प्रारूप

(नियम 8 देखिए)

मैं/हम सुपुत्र/पत्नी
 आयु वर्ष, निवासी
 और सुपुत्र/पत्नी
 आयु वर्ष, निवासी
 शपथ पर निम्नलिखित रूप में घोषणा करता/करती हूँ/करते हैं:—

1. मैंने/हमने मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 5 के उपबंधों और दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों को अच्छी प्रकार से समझ लिया है।

2. मैं/हम मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 के उपबंधों की तुलना में दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों से शासित होना चाहता/चाहती हूँ/चाहते हैं।

3. ऊपर घोषणा में जो कुछ कहा गया है वह सत्य है।

अभिमात्री

प्राज तारीख, 19... को हस्ताक्षरित और सत्यापित।

अभिमात्री

[फा.सं.-II (27)/85-वि.-III]

सी. रामन मेनन, अपर सचिव

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

(Legislative Department)

NOTIFICATION

New Delhi, the 19th May, 1986

G.S.R. 776(E).—In exercise of the powers conferred by section 6 of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 (25 of 1986), the Central Government hereby makes the following rules for carrying out the purposes of the said Act, namely:—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Rules, 1986.

(2) They shall come into force at once.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires.—

(a) "Act" means the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 (25 of 1986);

(b) "Code" means the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974); and

(c) "Form" means form annexed to these rules.

3. Service of summons.—(1) Every summons issued by a Magistrate on an application made under the Act, shall be in writing, in duplicate, signed by the Magistrate or by such other officer as he may, from time to time, direct, and shall bear the seal of the Court.

(2) Every such summons shall be accompanied by a true copy of the application.

(3) Every summons issued under sub-rule (1) shall specify the date of the first hearing of the application which shall not be later than seven days from the date on which the summons is issued.

(4) Every summons shall be served by a police officer or by an officer of the Court issuing it.

(5) The summons shall, if practicable, be served personally on the respondent, by delivering or tendering to him one of the duplicates of the summons.

(6) Every respondent on whom the summons is so served shall, if so required by the serving officer, sign a receipt therefor on the back of other duplicate.

(7) Where the respondent cannot, by the exercise of due diligence, be found, the summons may be served by leaving one of the duplicates for him with some adult male member of his family residing with him, and the person with whom the summons is so left shall, if so required by the serving officer, sign a receipt therefor on the back of the other duplicate.

(8) If the service cannot, by the exercise of due diligence, be effected as provided in sub-rule (6), or sub-rule (7), the serving officer shall affix one of the duplicates of the summons to some conspicuous part of the house or homestead in which the respondent ordinarily resides; and thereupon the Court, after

making such inquiries as it thinks fit, may either declare that the summons has been duly served of order fresh summons in such a manner as it considers proper.

(9) When a Court desires that a summons issued by it shall be served at any place outside its local jurisdiction, it shall ordinarily send such summons in duplicate to a Magistrate within whose local jurisdiction, the respondent resides, or is, to be there served.

(10) When a summons issued by a Court is served outside its local jurisdiction and in any case when an officer who served the summons is not present at the hearing of the case, an affidavit purporting to be made before a Magistrate that such summons has been served and a duplicate of summons purporting to be endorsed [in the manner provided by sub-rule (6) or sub-rule (7)] by the person to whom it was delivered or tendered or with whom it was left shall be admissible in evidence and the statements made therein shall be deemed to be correct unless and until the contrary is proved.

(11) The affidavit mentioned in sub-rule (10) may be attached to the duplicates of the summons and returned to the Court.

4. Evidence.—All evidence in the proceedings under the Act shall be taken in the presence of the respondent against whom an order for the payment of provision and maintenance, Mahr or power or the delivery of property is proposed to be made or, when his personal attendance is dispensed with, in the presence of his pleader, and shall be recorded in the manner specified for summary trials under the Code:

Provided that if the Magistrate is satisfied that the respondent is wilfully avoiding service or wilfully neglecting to attend the Court, Magistrate may proceed to hear and determine the case ex parte and any order so made may be set aside for good cause shown on application made within seven days from the date thereof subject to such terms as to payment of cost to the opposite party as the Magistrate may think just and proper.

5. Power to postpone or adjourn proceedings.—In every application under the Act, the proceedings shall be held as expeditiously as possible and in particular, when the examination of witnesses has once begun, the same shall be continued from day to day until all the witnesses in attendance have been examined unless the Court finds adjournment of the same beyond the following day to be necessary for reasons to be recorded.

6. Costs.—The Court in dealing with the applications under the Act shall have power to make such order as to cost as may be just.

7. Affidavit under section 5.—An affidavit filed under section 5 of the Act shall be in Form 'A'.

8. Declaration under section 5.—A declaration in writing filed under section 5 shall be in Form 'B'.

Form A

FORM OF AFFIDAVIT

(See rule 7)

I|we.....son|wife of aged years, resident of andson|wife of aged years, resident of hereby state on oath as follows:—

1. That I|we have informed myself|ourselves of the provisions of section 5 of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 and of the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973.

2. That I|we desire to be governed by the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973 in preference to the provisions of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986.

3. That the contents of the above affidavit are true.

Deponent|Deponents.

Signed and verified at this the..... day of 19.....

Deponent|Deponents.

Form 'B'

FORM OF DECLARATION

(See rule 8)

I|we son|wife of aged years, resident of and son|wife of aged years, resident of hereby declare as follows :—

1. That I|we have informed myself|ourselves of the provisions of section 5 of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 and of the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973.

2. That I|we desire to be governed by the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973 in preference to the provisions of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986.

3. That the contents of the above declaration are true.

Deponent|Deponents.

Signed and verified at this the day of 19.....

Deponent|Deponents.

[F. No. 11(27)/85-Leg. III]

C. RAMAN MENON. Addl. Secy.